अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : चतुर्थ – जैन धर्म मध्यमा (परीक्षा 13 जुलाई, 2025)

समय : 3 घण्टे | उत्तरतालिका | अंक : 100

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(a) खामेमि.....जीवे रिक्त स्थान के लिए सही शब्द है-
(क) सव्व (ख) सव्वे
(ग) सव्वा (घ) सव्वो (क)

(b) 'दूसरों की चुगली करना' कौनसा पाप स्थान है-
(क) पर परिवाद (ख) अभ्याख्यान
(ग) पैशुन्य (घ) मृषावाद (ग)

(c) पाक्षिक प्रतिक्रमण में कितने लोगस्स का कायोत्सर्ग किया जाता है-
(क) 10 (ख) 08
(ग) 16 (घ) 12 (ख)

(d) पाँचवाँ आवश्यक है-
(क) कायोत्सर्ग (ख) प्रतिक्रमण
(ग) प्रत्याख्यान (घ) चउवीसत्थव (क)

(e) प्रभावना होती हैं-
(क) 8 (ख) 6
(ग) 5 (घ) 4 (क)

(f) चार स्कन्धों को धारण करने वाला कहलाता है-
(क) धर्मकथा प्रभावक (ख) तपस्वी प्रभावक
(ग) विद्यावान प्रभावक (घ) प्रकट व्रताचारी (घ)

(g) 'जिन शासन में निपुण व कुशल होना' किसका भेद है-
(क) दूषण (ख) लक्षण
(ग) भावना (घ) भूषण (घ)

(h) संसार में उदासीनता रूप वैराग्य का भाव होना कहलाता है-
(क) संवेग (ख) निर्वेद
(ग) कांक्षा (घ) शम (ख)

(i) 'भवज्वाला-शान्त्यै प्रभवति.....वा स्मृतमपि' रिक्त स्थान के लिए सही शब्द है-
(क) धर्मं (ख) धनं
(ग) जलं (घ) बलं (ग)

(j) राजा प्रसेनजित किस तीर्थंकर की परम्परा के उपासक थे-
(क) भ. पार्श्वनाथ (ख) भ. ऋषभदेव
(ग) भ. महावीर (घ) भ. शांतिनाथ (क)

(k) माता के मोह को कम करने के लिए बालक ने क्या प्रारम्भ किया-
(क) वंदन (ख) क्रंदन
(ग) नमन (घ) रूदन (घ)

(l) 'ओम शांति-शांति' प्रार्थना के रचयिता हैं-
(क) आचार्य श्री हस्तीमल जी (ख) आचार्य श्री हीराचन्द्र जी
(ग) श्री गौतम मुनि जी (घ) श्री गजसिंह राठौर (क)

(m) भगवान के पानी की एक बून्द में जीव बताये हैं-
(क) असंख्यात (ख) 34650
(ग) अनन्त (घ) 36450 (क)

(n) एश्वर्य और ख्याति प्रदान करने वाली दिशा है-
(क) पूर्व (ख) पश्चिम
(ग) उत्तर (घ) दक्षिण (क)

(o) दशवैकालिक सूत्र के किस अध्ययन में रात्रि भोजन त्याग का वर्णन है-
(क) तीसरे (ख) चौथे
(ग) छठे (घ) तीनों ही (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) आज्ञा का प्रमुख अर्थ अनुमति नहीं होता है। (हाँ)
(b) 'खित्तवुड्ढी' दिशिव्रत का अतिचार है। (हाँ)
(c) 'आस्था' व्यवहार समकित का लक्षण नहीं है। (नहीं)
(d) 'जीवित रहने की कामना की हो' आठवें व्रत का अतिचार है। (नहीं)
(e) दसवें व्रत में चौदह नियम ग्रहण करने का उल्लेख है। (हाँ)
(f) चौथे आवश्यक में अठारह पापस्थान दो बार बोला जाता है। (नहीं)
(g) 'समकित' धर्मरूपी आभूषणों की पेटी है। (हाँ)
(h) सम्यक्दृष्टियों की संगति का त्याग करना 'श्रद्धान' है। (नहीं)
(i) आर्यवज्र को शैशवकाल में जाति-स्मरण ज्ञान हो गया था। (हाँ)
(j) पूणिया श्रावक बहुपरिग्रही थे। (नहीं)
(k) देव ने प्रसन्न होकर वज्रमुनि को वैक्रिय शक्ति दे दी। (हाँ)
(l) विश्वसेन और अचिरा शांतिनाथजी के माता-पिता थे। (हाँ)
(m) उत्तर पूर्व के बाह्य भाग को 'ईशान कोण' कहते हैं। (नहीं)
(n) धोवन पानी पीने से कर्मों की निर्जरा होती है। (हाँ)
(o) सूर्य के ताप में कीटाणु सक्रिय बन जाते हैं। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	सिद्ध भगवान	(क) आचारांग सूत्र	पन्द्रह भेद
(b)	कर्मादान	(ख) राजगृही	साडीकम्मे
(c)	ग्यारह अंग	(ग) उद्यान	भगवती सूत्र
(d)	भाव वंदना	(घ) साडीकम्मे	वज्रासन
(e)	यतना	(च) पन्द्रह भेद	दान
(f)	मण्डित कुक्षि	(छ) सचित्त मिश्र	उद्यान
(g)	राजा श्रेणिक	(ज) दान	राजगृही
(h)	आगार	(झ) वज्रासन	छह
(i)	दिशा बोध	(य) छह	आचारांग सूत्र
(j)	कैम्पर	(र) भगवती सूत्र	सचित्त मिश्र

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a) मैं प्रतिक्रमण का प्रथम पाठ हूँ। इच्छामि णं भंते
(b) मेरे आने की कोई तिथि या समय नियत नहीं है। अतिथि
(c) मेरा प्रायश्चित्त पच्चीस सामायिक या चार प्रहर का पौषध होता है। चातुर्मासिक प्रतिक्रमण
(d) मेरे पाठ में चतुर्विध संघ एवं समस्त जीवों से क्षमा मांगी गई है। आयरिए उवज्झाए
(e) मेरे पाठ में ज्ञान दर्शन चारित्राचारित्र तथा तप से सम्बन्धित अतिचारों का समुच्चय रूप से कथन किया गया है। निन्यानवें अतिचार
(f) मैं आठवाँ उपांग हूँ। निरयावलिया
(g) मुझे क्षायिक वेदक भी कहते हैं। वेदक सम्यक्त्व

(h)	मैं राग रंग में विशेष अनुराग रखता हूँ।	तरुण पुरुष
(i)	मैं सूर्य के समान त्रिजगत का साक्षी हूँ।	महावीर स्वामी
(j)	मैं आगामी चौबीसी का प्रथम तीर्थंकर हूँ।	पद्मनाभ
(k)	मैं सभी गुणों में शिरमोर व सभी कलाओं में प्रवीण हूँ।	युवराज श्रेणिक
(l)	मैंने आर्य वज्र को दस पूर्वों की वाचना दी।	आर्य भद्रगुप्त
(m)	मृदु स्वर में मेरा पाठ करने से दुःख नहीं होता है।	शांतिनाथ
(n)	मेरी काल मर्यादा सभी ऋतुओं में 5 प्रहर की होती है।	धोवन पानी
(o)	रात्रि भोजन करने वालों को मेरी उपमा दी गई है।	रावण

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- **9x2 = (18)**

(a) चार मूल सूत्र के नाम लिखिए।
उत्तराध्ययन, दसवैकालिक, नन्दी सूत्र, अनुयोग द्वार सूत्र।

(b) तस्स सव्वस्स का पाठ लिखिए।
तस्स सव्वस्स देवसियस्स अइयारस्स, दुब्भासिय-दुच्चितिय-दुच्चिट्ठियस्स आलोयंतो पडिक्कमामि।

(c) प्रथम अणुव्रत के अतिचार लिखिए।
बंधे, वहे, छविच्छेए, अइभारे, भत्तपाण विच्छेए।

(d) उपाध्याय जी के पच्चीस गुण लिखिए।
ग्यारह अंग, बारह उपांग, चरण सत्तरी, करण सत्तरी

(e) वादी प्रभावक तथा नैमित्तिक प्रभावक का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
वादी प्रभावक- प्रत्यक्ष हेतु दृष्टान्त पूर्वक अन्यमतियों से वाद करके धर्म को दीपाने में चतुर होवें।
नैमित्तिक प्रभावक- निमित्त ज्ञान से भूत, भविष्य और वर्तमान काल की बात जानने वाला होकर धर्म को चमकाएँ।

(f) राजा श्रेणिक का नाम 'बिम्बसार' कैसे पड़ा ?
बम्बा लेने तथा बजाने के कारण श्रेणिक का दूसरा नाम 'बिम्बसार' पड़ा।

(g) 'शांतिनाम.....शान्ति कहो।' रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।
शान्तिनाम जो जपते भाई, मन विशुद्ध हिय धीरज लाई।
अतुल शान्ति उन्हें हो, सब मिल शान्ति कहो।।

(h) दक्षिण दिशा को अशुभ क्यों माना जाता है ?
इस दिशा में उत्पन्न होने वाले प्रायः दुर्बल एवं अशुभ वर्ण वाले होते है तथा दक्षिण दिशा में कृष्ण पक्षी जीवों की बहुलता अधिक होने के कारण इसे अशुभ माना जाता है।

(i) रात्रि भोजन के विषय में आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की क्या प्रेरणा रही है ?
जैन धर्मावलम्बी रात्रि भोजन नहीं करे तथा शादी-विवाह आदि प्रसंगों पर भी रात्रि भोज का आयोजन न करें।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **9x3 = (27)**

(a) सिद्धों के आठ गुण क्रम से लिखिए।

1. अनन्त ज्ञान	2. अनन्त दर्शन	3. अव्याबाध सुख	4. क्षायिक समकित
5. अटल अवगाहना	6. अमूर्त	7. अगुरु-लघु	8. अनन्त आत्म-सामर्थ्य

(b) प्रतिक्रमण किस-किस का किया जाता है ? नाम लिखिए।
मिथ्यात्व का, अव्रत का, प्रमाद का, कषाय का और अशुभ योग का।

(c) समुच्चय पच्चक्खाण का पाठ लिखिए।
गंठिसहियं, मुट्ठिसहियं, नमोक्कारसहियं, पोरिसि, साड्ढपोरिसिं, तिविंह पि/ चउव्विहं पि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अपनी-अपनी धारणा प्रमाणे पच्चक्खाण अन्नत्थऽणाभोगेणं,

सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

(d) परमत्थ संथवो.....सद्दहणा। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।
परमत्थ-संथवो वा, सुदिट्ठ-परमत्थ-सेवणा वा वि।
वावण्ण-कुदंसण-वज्जणा, य सम्मत्त-सद्दहणा।।

(e) अनुकम्पा किसे कहते हैं ?अनुकम्पा के कितने भेद हैं ?उनके अर्थ भी लिखिए।
दुःखी जीवों के दुःख को मिटाने की इच्छा अनुकम्पा है। द्रव्य और भाव के भेद से अनुकम्पा दो प्रकार की है। शक्ति पूर्वक दुःखी जीवों के दुःख को दूर करना द्रव्य अनुकम्पा है तथा दुःखी को देखकर दया से हृदय कोमल हो जाना भाव अनुकम्पा है।

(f) कनत्स्वर्णा.....तनयः। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।
कनत्स्वर्णा-भासोऽप्यपगत-तनुर, ज्ञान-निवहो,
विचित्रात्माऽप्येको नृपतिवर-सिद्धार्थ-तनयः।।

(g) भगवान महावीर ने राजा श्रेणिक को नरक में जाने से बचने के लिए क्या-क्या उपाय बताये थे ?
1. कपिला दासी से दान दिलाना। 2. स्वयं नवकारसी तप का पालन करना।
3. कालसौकरिक कसाई से पशुवध बंद कराना।
4. अपनी दादी को संत दर्शन (मेरे दर्शन) करवाना
5. पूणिया श्रावक की सामायिक खरीदना।

(h) हमारा पाचन तंत्र किसके समान है ?सूर्यास्त के बाद भोजन ग्रहण करने के क्या परिणाम होते हैं ?
पाचन तंत्र कमल के समान है।सूर्यास्त के बाद भोजन ग्रहण करने के परिणाम निम्नलिखित हैं-
1. पेट से सम्बन्धित समस्याएँ जैसे- गैस, अजीर्ण आदि बिमारियाँ उत्पन्न होती हैं।
2. यदि रात्रि भोजन करके समय जूँ खाने में आ जावें तो जलोदर रोग की उत्पत्ति हो जाती है।
3. यदि चीटीं खाने में आये तो पिस्ती रोग, बिच्छू से एग्जिमा, मच्छर से मलेरिया आदि कई रोग उत्पन्न हो सकते हैं।
4. शरीर में मोटापा बढ़ता है जिससे बी.पी., शुगर आदि कई घातक बिमारियाँ हो जाती हैं।

(i) ईशान कोण को सबसे पवित्र क्यों माना जात है ?इस कोण की शुभता का वैज्ञानिक कारण बताइए।
इस कोण पर देवताओं और आध्यात्मिक शक्ति का वास रहता है इसलिए यह सबसे पवित्र कोण माना जाता है। ज्योतिषी के अनुसार इस दिशा को मोक्ष का कारक भी माना जाता है।
इस दिशा की शुभता का वैज्ञानिक कारण यह है कि उत्तर दिशा में चुम्बकीय ऊर्जा का प्रवाह निरंतर होता रहता है, जिससे यहाँ सकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव पड़ता रहता है।